International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

आध्यात्मिक शिक्षा जीवन जीने की कला : एक अध्ययन

RAMESH CHAND VERMA

Assistant Professor (Vidhya Sambal)
Govt. Girls college Todabhim,karauli

प्रस्तावना

वर्तमान युग में भौतिकवाद का वर्चस्व है। जिसमें जिन्दगी द्रुत गति के साथ दौड़ रही है। भौतिक दृष्टि से शान्ति की सम्भावना समाप्त हो जाने पर चिन्तनशील मानव ने ऐकान्तिक एवं आत्यन्तिक शान्ति के निमित्त जिस शास्त्र को विकसित किया वही शान्तिशास्त्र कहलाता हैं। आज अमेरिका, चीन, फ्रांस, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत सभी देशों में शान्ति की सम्भावना समाप्त हो रही है। सर्वप्रथम कार्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिए शान्त तेज रूप वाले परम पिता परमात्मा को नमस्कार करता हूँ। ईश्वर को अनेक ग्रन्थों में शान्त स्वरूप वाला कहा गया है तथा आध्यात्मवाद, निर्वाण, मोक्ष में सभी शान्ति के परिचायक है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की कार्यकारिणी सभा बुलाई गई। इस सभा में यह निर्णय लिया गया कि 21वीं शताब्दी के लिए नई राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार की जाये। यह रूपरेखा आगे चलकर राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा नामक शीर्षक से दिसम्बर 2005 में प्रकाशित हुई। एन0सी0एफ0 ने 21वीं सदी को भौतिकवाद की संज्ञा दी। जिसमें विकास, नवीनीकरण आदि का वर्चस्व दिखाई देता है परन्तु कहीं ना कहीं शान्ति का अभाव दिखाई दिया। इसलिए एन0सी0एफ0 ने शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया। वर्तमान में वैश्विक, राष्ट्रीय एवं स्थानीय, प्रत्येक स्तर पर हिंसा का बोलबाला है। अतः समाज में शान्ति स्थापित करने में शिक्षा के महत्व को देखते हुए छात्र छात्राओं को शान्ति शिक्षा दी जानी आवश्यक हैं। शान्ति शिक्षा इस प्रकार दी जानी चाहिए जिससे छात्र–छात्राओं में शान्ति के प्रति अनुराग पैदा हो, उनमें सहनशक्ति, न्यायप्रियता और आपसी समझ बढ़े तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास हो। इस हेतु महापुरूषों की जीवनी एवं कहानी आदि का श्रवण तथा परिचर्या आयोजित की जा सके।

शान्तिया आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः।2

अर्थात् शान्ति के द्वारा ही प्राणी स्वयं का आत्मसाक्षात्कार कर सकता हैं।

नैतिकता और वैश्विक शांति के लिए मूल्य शिक्षा

विद्या धनम् सर्वधनम् प्रधानम्।3

शान्ति धनम् सर्वधनम् प्रधानम्।।

शिक्षा से शान्ति सर्वोपरि कहने को तो शिक्षा से बड़ा अर्थात् विद्या से बड़ा कोई धन नहीं होता। परन्तु आज शान्ति के अभाव में आप किसी भी वस्तु की कल्पना नहीं कर सकते।

शान्ति धनम सर्वधनम प्रधानम

दु:खत्रयाअभिघताज्जिाझासा तदभिघातके हेतौ।4

दृष्टे साआपार्था चेन्नैकान्तत्यन्ततोअ भावात।।

भौतिक दृष्टि से शान्ति की सम्भावना समाप्त हो जाने पर चिन्तनशील मानव ने ऐकान्तिक शान्ति के निमित्त जिस शास्त्र को विकसित किया वहीं शांतिशास्त्र कहलाता है–

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये।5
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थारोधेन ये।
तेअमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये निघ्नन्ति निरर्थक परहितं ते के न जानीमहे।।

यदि हमारे पास दुनिया का पूरा वैभव और सुख साधन उपलब्ध है। परन्तु शान्ति नहीं है, तो हम भी आम आदमी की तरह ही है। संसार में मनुष्यों द्वारा जितने भी कार्य अथवा उद्यम किये जा रहे है। सबका एक ही उद्देश्य हैं शान्ति। सबसे पहले तो हमें ये जान लेना चाहिए कि शान्ति क्या हैं। शान्ति का केवल अर्थ यह नहीं कि केवल मुख से चुप रहें अपितु मन का चुप रहना ही सच्ची सुख शान्ति का आधार है। कहते है कि जहाँ शान्ति है वहाँ सुख है, अर्थात् सुख का शान्ति से गहरा नाता हैं लड़ाई दुःख और लालच को भंग करने के लिए शान्ति सशक्त औजार है। कई लोग कहते हैं कि बिना इसके शान्ति नहीं हो सकती। इसके साथ ही भौतिक सुख साधनों तथा अन्य संसाधनों से शान्ति होगी यह कहना भी गलत है। यदि इससे शान्ति हो जाती तो हम मंदिर आदि के चक्कर नहीं लगते।

धन दौलत और संपदा से संसाधन खरीदे जा सकते है, परन्तु शान्ति नहीं। हम यही सोचते रह जाते है, कि यह कर लूँगा तो शान्ति मिल जायेगी। आवश्यकताओं को पूरा करते–करते पूरा समय निकल जाता है। और न तो शान्ति मिलती है और न ही खुशी अर्थात् संसार में प्राणी अपनी स्वार्थ सिद्धी के लिए दूसरे की शान्ति को भंग करने में जरा सी देर नहीं लगाता।

खुशहाल परिवारिक जीवन के लिए जरूरी है कि पहले परिवार में शान्ति रहे। जहाँ शान्ति है वहाँ विकास हैं। जहाँ विकास है वहाँ सुख है, इसलिए अमूल्य शान्ति के लिए सबसे पहले हमें अपने आप को देखना होगा। अपने बारे में जानना होगा। मैं कौन हूँ कहाँ से आया हूँ और हमारे अन्दर कौन कौन सी शक्तियां है, जो हम अपने अन्दर ही प्राप्त कर सकते हैं।

शान्ति का सागर परमात्मा है। जब हमारे अन्दर शान्ति आयेगी तो हमारा विकास होगा। जब विकास होगा तो वहाँ सुख का साम्राज्य होगा। यह प्रक्रिया बिल्कुल सरल और सहज है, जिसके जरिए हम यह जान और पहचान सकते है। वर्तमान समय अशान्ति और दुःख के भयानक दौर से गुजर रहा है। ऐसे में जरूरत है कि हम अपने धर्म और शास्वत सत्य को स्वीकारते हुए शान्ति के सागर परमात्मा से अपने तार जोड़े ताकि हमारे भीतर शान्ति का खजाना मिलें इससे हमारे अन्दर शान्ति तो आयेगी ही साथ ही हम दूसरों को भी शान्ति प्रदान कर सकेंगे।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रछन्नगुप्तं धनं6
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरुणां गुरु
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं
विद्या राजसु पूजिता न हि धनं विद्याविहीनः पशुः।।

ध्यानावस्था में आत्मास्वरूप को देह से अलग करो और क्रमशः उसे आकाश, हवा, अग्नि, पानी, पृथ्वी की परीक्षा में से निकलते हुए देखों। कल्पना करो कि मेरी देह की बाधा हट गई है और अब मैं स्वतंत्र हो गया हूँ। अब तुम आकाश में इच्छापूर्वक ऊँचे नीचे पखेरुओं की तरह जहाँ चाहे उड़ सकते हो। हवा के वेग से गति में कुछ भी बाधा नहीं पड़ती और न उसके द्वारा जीव कुछ सुखता ही है। कल्पना करो कि बडी आग की ज्वाला जल रही है और तुम उसमें होकर मजे में निकल जाते हो और कुछ भी कष्ट नहीं होता है। भला जीव को आग कैसे जला सकती है, उसकी गर्मी की पहुंच तो सिर्फ शरीर तक ही थी। इसी प्रकार पानी और पृथ्वी के भीतर भी जीव की पहुंच वैसे ही है जैसे आकाश में अर्थात् कोई भी तत्व तुम्हें छू नहीं सकता और तुम्हारी स्वतन्त्रता में तनिक भी बाधा नहीं पहुँचा सकता।

किसी भी धर्म में हिंसा और रक्त क्रान्ति की जगह नहीं है। गाँधी जी अंहिसा के रास्ते पर चलकर महात्मा के नाम से जाने लगे। जिस समय देश गुलामी की जंजीरों से जकड़ा हुआ था। उस समय स्वामी विवेकानन्द प्रेरणा स्त्रोत बने गुलामी की कायर मानसिकता से

उबारा। उन्होने कहा कि वैज्ञानिक अध्यात्मवाद सबसे बड़ा वेदांत है। महात्मा बुद्व ने अहिंसा ओर शिक्षा के दम वेदांत को घर–घर पहुँचाया।

विश्व शान्ति को लेकर मानवीय दृष्टिकोण

हम जब प्रातः जागते है और रेडियों सुनते है या समाचार पत्र पढ़ते हैं। तो हमारा सामना उन्ही दुःखद समाचारों से होता है जो हिंसा, अपराध, युद्व से परिपूर्ण हो। आज के इस आधुनिक युग में भी यह बात स्पष्ट है कि किसी का भी मूल्यवान सुरक्षित नहीं है। किसी भी पूर्व पीढी को इतने बुरे समाचारों का सामना नहीं करना पड़ा है। जिनका सामना हम कर रहे है भय और तनाव की यह सतत् अनुभूति किसी भी संवेदनशील और करूणाशील व्यकित को हमारे आधुनिक विश्व के विकास को लेकर गंभीरता से पक्ष उठाने पर विवश करना चाहिए। यह विडम्बना है कि अधिक गंभीर समस्याएं औद्योगिक रूप से अधिक विकसित समाजों से आती है। विज्ञान और तकनीक ने कई क्षेत्रों में चमत्कारिक कार्य किये हैं। पर मनुष्य की मूलभूत समस्याएँ बनी हुई है। अभूतपूर्ण साक्षारता है पर फिर भी लगता नहीं कि इस वैश्विक शिक्षा ने अच्छाई को बढ़ावा दिया हो अपितु इसके स्थान पर केवल मानसिक अशान्ति और असंतोष की बढ़त हुई हैं हमारे भौतिक विकास और तकनीक में बढत को लेकर कोई संदेह नहीं पर फिर भी यह पर्याप्त नहीं है। क्योंकि अभी तक हम शान्ति और सुख लाने में या पीड़ाओं पर काबू पाने में सफल नहीं हुए हैं।

हम केवल निष्कर्ष निकाल सकते है कि हमारे उन्नति तथा विकास में कोई गंभीर चूक हुई और यदि हमने समय रहते उसे रोका नहीं तो मानवता के भविष्य के लिए उसके विनाशकारी परिणाम होगे। मैं विज्ञान और तकनीक के विरोध में बिल्कुल भी नहीं हूँ। उन्होनें मानवता के समय अनुभव हमारे भौतिक सुख तथा कल्याण में और जिस विश्व में हम रह रहे है। उसके अधिक समय में बहुत अधिक सहयोग दिया है। पर यदि हम विज्ञान और तकनीक पर बहुत अधिक बल दे तो हमारा मानवीय ज्ञान और समझ के उन अंगों से संपर्क टूटने का खतरा है। जो ईमानदारी और परोपकार की ओर प्रेरित करें। विज्ञान और तकनीक में यद्यपि अनगिनत भौतिक सुख उपलब्ध कराने की क्षमता है, पर यह हमारे सदियों पुराने आध्यात्मिक तथा मानवीय मूल्यों का स्थान नहीं ले सकते जिन्होने विश्व सभ्यता को उनके सभी राष्ट्रीय रूप में जैसा हम जानते है एक व्यापक आकार दिया है। कोई भी विज्ञान के अभूतपूर्वक भौतिक लाभ को नकारा नहीं सकता पर हमारी आधारभूत मानवीय समस्यायें बनी हुई है।

हम अभी भी उन्हीं का सामना कर रहे हैं। यदि और अधिक नहीं तो दुःख भय तथा तनाव। इसलिए यह तर्कोचित ही है कि एक ओर भौतिक विकास दूसरी ओर आध्यात्मिक मूल्यों के विकास के बीच संतुलन साधा जाए। इस समन्वय को लाने के लिए हमें अपनी मानवीय मूल्यों को पुनर्जीवित करना होगा। मेरा दृढ़ विश्वास है कि कई लोग आज के वैश्विक नैतिक संकट को लेकर मेरी चिन्ता से सहमति रखते है और सभी मानवतावादी ओर धर्म अभ्यासी भी जो हमारे समाज को अधिक करूणामय न्यायपूर्ण और एक समान बनाने को लेकर चिंतित है मेरे आग्रह से जुड़ेगें।

यूनेस्कों की 70वीं वर्षगांठ

यूनेस्कों की 70वीं वर्षगांठ मुझे इस युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि का स्मरण कराती हैं। मानवीय इतिहास में पहली बार हमारे पास समूचे विश्व के लिए एक संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ है। मैं युनेस्कों के लिए महात्मा गांधी के संदेश को स्मरण करता हूँ जिसमें उन्होनेस्थाई शान्ति स्थापित करने के लिए शिक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति के तत्काल कदम उठाए जाने का आग्रह किया था और इसके बाद यूनेस्कों के प्रारंभिक वर्षों में अपने देश के राष्ट्रपति डॉ0 राधाकृष्णन के नेतृत्व का भी स्मरण करता हूँ। 70वीं वर्षगांठ हमारे अब तक की उल्लेखनीय यात्रा के आयोजन का अवसर है। यह उस बुद्धिमता के साथ आगे देखने का अवसर भी है जो हमें समय और अनुभव से प्राप्त हुई है। हम संयुक्त राष्ट्र में जो कुछ भी हासिल करने की कामना करते है उसमें सदैव यूनेस्कों भूमिका निभाता रहेगा।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने महात्मा गांधी के आदर्शों एवं विचारों को विश्वव्यापी मान्यता प्रदान की अहिंसा की नीति के जरिये विश्व भर में शान्ति के संदेश को बढ़ावा देने के महात्मा गांधी में योगदान को स्वीकारने के लिए ही राष्ट्र संघ ने महात्मा गांधी के जन्म दिवस 2

अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में विश्व भर में प्रतिवर्ष मनाने का निर्णय वर्ष 2007 में लिया गया। मौजूदा विश्व व्यवस्था में अंहिसा की सार्थकता को मानते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा में भारत द्वारा रखे गये प्रस्ताव को बिना वोटिंग के ही सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। महासभा के कुल 191 सदस्य देशों में 140 से भी ज्यादा देशों का समर्थन मिलना विश्व में आज भी गांधी जी के प्रति सम्मान और उनके विश्वव्यापी विचारों और सिद्धान्तों की नीति की प्रासंगिकता को दर्शाता है।

महात्मा गांधी ने कहा कि जो बदलाव आप विश्व में देखना चाहते हैं। उसकी शुरूआत स्वयं अपने से करनी होगी। यदि हमें पूरे विश्व में शान्ति स्थापित करनी है तो हमें भारतीय मूल्यों को शिक्षा में समाहित करना होगा। आज सम्पूर्ण विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकता शान्ति शिक्षा है। जिससे मानव का जीवन सुखमय हो सकें।

सन्दर्भ

1. नीतिशतकम् भर्तृहरि–श्री तारिणीश झा– रामनारायण लाल विजय कुमार इलाहाबाद, पृष्ठ–39
2. वैदिक संस्कृति–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ 46
3. भारतीय संस्कृति, कपिलदेव द्विवेदी पृष्ठ 188
4. भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण–संगम लाल पाण्डेय, पृष्ठ–92
5. नीतिशतक भर्तृहरि
6. ऋग्वेद
7. ईश्वर कृष्ण सांख्यकारिका
8. मीडिया रिपोर्ट
9. यूनेस्को रिपोर्ट
10. रमन बिहारीलाल समकालीन भारत और शिक्षा
11. एन0सी0ई0आर0टी0 रिपोर्ट
12. एन0सी0एफ रिपोर्ट 2005
13. सांख्यकारिका–डॉ. आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ–87
14. नीतिशतकम्–श्री तारिणीश झा, पृष्ठ–29